MEERA

HOSPITAL

3. शनिदेव

को कैसे प्रसन्न करें

कि हमारे दु:खों का

अन्त हो जावे ?

द्वापर युग के अन्त में, श्री शंकर जी ने कलियुग में तंत्र–मंत्र–यंत्र का दुरूपयोग ना हो सके, इसे रोकने के लिए उनको कील दिया था। साथ ही, 5 देवी–देवताओं को छोड़कर, सबको कीलित कर दिया था और फिर अनंत समाधि में चले गए ।

अब कलियुग में अपने भक्तों की सहायता करने वाले केवल ये पांचों देवी–देवता ही जागृत अवस्था में हैं :–

१. **श्री गणेश जी** क्योंकि यह प्रथम पूज्य देवता है ।

२. **श्री दुर्गा जी** क्योंकि यह परम आदि शक्ति है ।

शक्ति के बिना शिव भी शव है। जगत का संचालन शक्ति से ही होता है। वर्तमान में, यह वैष्णों देवी के नाम से प्रसिद्ध है।

३. **श्री हनुमान जी** क्योंकि त्रेता युग के अन्त में, भगवान श्रीराम जी ने अपने भक्तों की रक्षा और सहायता की जिम्मेदारी हनुमानजी को ही दी थी ।

४. **श्री खाटु श्याम जी** क्योंकि भगवान श्री कृष्ण ने अपने परम भक्त बर्बरीक का मस्तक दान में लेकर, उसे कलियुग में अपने भक्तों की सहायता करने का आदेश दिया था।

भगवान श्री कृष्ण ने बर्बरीक को अपना नाम भी दिया, इसलिए वे खाटु के श्यामजी नाम से प्रसिद्ध हैं।

५. श्री शनि देव – क्योंकि ज्योतिष के अनुसार सूर्य–पुत्र शनि देव को न्यायाधीश का पद मिला है। शनि देव न्याय के देवता हैं और कलियुग में बुरे काम करने वालों को कठोर सजा देते हैं। इसी वजह से जन्म कुण्डली में शनि की स्थिति और शनि की दृष्टि अन्य ग्रहों की तुलना में काफी अधिक महत्त्व रखती है। शनि देव की वेशभूषा काले रंग की है, इसीलिए न्यायालय में न्यायाधीश और वकील काला कोट, काली पेन्ट, काला गाउन पहनते हैं। न्याय की देवी की आँखों पर भी काले रंग की ही पट्टी बंधी है।

न्याय करने के लिए शनि देव को इसलिए नियुक्त किया कि जब सूर्य देव ने अपनी ४ पत्नियों में से एक छाया देवी के साथ अन्याय किया, तब शनि देव ने ही इसका घोर विरोध किया और सूर्य देव को दण्ड देकर असह्य पीड़ा पहुँचाई।

ज्योतिष में सूर्य और शनि एक दूसरे के शत्रु ग्रह हैं, और राहु–केतु शनि के परम मित्र हैं। जो देवता अन्याय करने पर अपने पूज्य पिताजी को भी दण्ड दे सकता है, वह कलियुग में किसी के साथ कैसे पक्षपात करेगा? शनि देव दण्ड नायक हैं, और मनुष्य को उसके बुरे कर्मों की उचित सजा देने के लिए साड़े साती के रूप में उसके पीछे लग जाते हैं। शनि की साड़े साती और शनि का ढैय्या लगने पर मनुष्य घोर कष्ट और पीड़ा पाता है। शनि देव के कोप से होने वाले दुःखों से बचने के लिए और शनि देव को प्रसन्न करने के लिए, पण्डितों द्वारा अनेकों उपाय बताए जाते हैं, जिनमें से कुछ सरल उपाय ये हैं :–

१. शनिवार का व्रत करते हुए, इस दिन बिना नमक का भोजन एक ही समय करें।

२. शनि स्त्रोत का पाठ करना या बीज मंत्र –

ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप करना।

३. शनिवार को शनि देव की प्रतिमा पर सरसों का तेल, काले तिल, काले उड़द चढ़ाना और उड़द की बनी इमरती, दही बड़े आदि का भोग लगाना।

४. शनि मंदिर में काले वस्त्रों, काली वस्तुओं अथवा लोहे का दान करना।

५. शनिवार को शमी याने खेजड़े के वृक्ष पर तेल चढ़ाना और तेल का दीपक जलाना।

६. शनिवार को पीपल के पेड़ पर गुड़ मिश्रित जल चढ़ाना, दीपक जलाना और शनि मंत्र बोलते हुए, ७ बार कच्चा सूत लपेटते हुए परिक्रमा करना।

७. शनिवार को शिवलिंग पर दूध, जल एवं काले तिल अर्पित करना और बिल्वपत्र चढ़ाना।

८. शनिवार के दिन शनिदेव का डाकोतरा (पण्डित) मिल जावे तो शनि मूर्ति पर तेल और पैसे चढ़ाना।

९. शनिवार को श्रवण नक्षत्र हो, तब शमी याने खेजड़े के वृक्ष की जड़ काले धागे से दांयी भुजा पर बाँधना।

१०. काले घोड़े की नाल, शनि यंत्र और काले पुतले को घर के दरवाजे पर टांगना।

११. मध्यमा उँगली में नीलम, कटैला, जामुनिया या काले घोड़े की नाल से बना हुआ छल्ला धारण करना।

१२. हनुमान जी की आराधना करना, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमान अष्टक का पाठ करना।

१३. शनिवार के दिन बंदरों को केले, गुड़, काले चने खिलाना और मछली को आटे की गोली खिलाना।

१४. तमिलनाडु के कुंभकोणम जिले में नवग्रह के ९ मंदिर हैं, जो तारा मण्डल की खगोलीय दूरी के अनुसार स्थित हैं। वहाँ तिरूनेल्लार गाँव में शनिग्रह का मंदिर है। वहाँ सरोवर में स्नान करके, शनि मंदिर में पूजा–अर्चना–हवन करने से भी शनिदेव बहुत प्रसन्न होते हैं।

१५. शनि शिंगनापुर जाकर शनिदेव की पूजा–अर्चना करना।

महाराष्ट्र के नासिक जिले में शिरड़ी से ७५ किलोमीटर दूर शिंगनापुर गाँव में शनिदेव की प्राचीन पाषाण प्रतिमा जागृत अवस्था में स्थित है। इसे स्वयंभू इसलिए माना जाता है, क्योंकि इस प्रतिमा का कोई आकार नहीं है, और यह पाषाण खण्ड शनि ग्रह से उल्कापिण्ड के रूप में आया था। यह खुले आकाश के नीचे स्थित है। इस गाँव के राजा शनिदेव हैं, इसलिए इस गाँव के लोग अपने घर–दुकानों में ताला नहीं लगाते हैं, लेकिन उनके घर से कभी चोरी नहीं होती है।

शनि मंदिर
शिंगनापुर

शनि एक ऐसा नाम है, जिसे पढ़ते–सुनते ही ज्योतिष शास्त्र पर विश्वास रखने वाले लोगों के मन में भय उत्पन्न हो जाता है। दशम भाव को कर्म, पिता तथा राज्य का भाव माना गया है। शनि से ही हमारा कर्म जीवन संचालित होता है। ऐसा कहा जाता है कि शनि की वक्रदृष्टि जिस पर पड़ जाए वह रातों–रात राजा से भिखारी हो जाता है, और वहीं शनि की कृपा से भिखारी भी राजा के समान सुख प्राप्त करता है। शनि देव ने राजा विक्रमादित्य को भी नहीं छोड़ा था, तब हमारी तो औकात ही क्या है ? इसलिए यदि किसी व्यक्ति ने इस जन्म में अथवा अपने पिछले जन्मों में कभी कोई बुरा कर्म किया है, तो वह शनि देव के प्रकोप से नहीं बच सकता है। शनि देव बुरे कर्म करने वालों के लिए बहुत क्रूर और विकराल रूप धारण कर लेते हैं।

शनि देव की प्रसन्नता के लिए हमें सैंकड़ों उपाय की जगह, वह एक ही उपाय करना चाहिए, जिससे शनि देव वास्तव में प्रसन्न होकर हमें सब कष्टों से मुक्त कर देवें और हम पर धन–दौलत की वर्षा कर देवें।

जो कोई व्यक्ति अपनी माता का बहुत आदर करता है और माता की सेवा करता है उससे शनि देव हमेशा प्रसन्न रहते हैं। अपनी माता को दु:ख देना अर्थात शनि देव को क्रोधित करना और हमें दण्ड देने के लिए प्रेरित करना।

हमेशा यह याद रखना चाहिए कि हमारे द्वारा किन बुरे कार्यों को करने से शनि देव हम पर क्रोधित होते हैं :–

शनि देव को यह पसन्द नहीं है

चोरी–बेईमानी करना, रिश्वत लेना, भ्रष्टाचार करना, झूंठी गवाही देना, निर्दोष लोगों को सताना, काम चोरी और मक्कारी करना, चालाकी से दूसरों का धन हड़प लेना, गाली–गलौच करना, किसी की पीठ में छुरा मारना, जुआ–सट्टा खेलना, शराब पीना, नशा करना, गुटका–तम्बाखु खाना, व्यभिचार करना, परस्त्री गमन करना, अप्राकृतिक रूप से संभोग करना, दाँतों को गंदा रखना, अपने गुरू, माता–पिता, चाचा–चाची, बुजुर्गों, सेवकों और विकलांगों का अपमान करना, जानवरों, कुत्तों और कौवों को मारना।

जब कोई व्यक्ति अपराध करता है, तो शनि देव के आदेशानुसार राहु और केतु उसे दण्ड देने के लिए सक्रिय हो जाते हैं। शनि देव की अदालत में पिछले जन्मों में किए हुए कर्मों का दण्ड पहले दिया जाता है। बाद में, मुकदमा इस बात के लिए चलता है कि यदि इस व्यक्ति का चाल–चलन ठीक रहता है, तो दण्ड की अवधि बीतने के पश्चात इसे फिर से खुशहाल कर दिया जाए या नहीं और अब उस पर कितनी धन–दौलत बरसाई जाए।

शनि देव को तेल चढ़ाने का सही तरीका

प्रत्येक शनिवार को, शनि मूर्ति पर तेल चढ़ाते समय, उस तेल में अपना मुँह देखकर यह संकल्प अर्थात प्रतिज्ञा करें कि हम किसी के साथ अन्याय नहीं करेंगे, चोरी–बेईमानी नहीं करेंगे और शनि देव को जो उपर्युक्त कार्य पसंद नहीं है, उनको अगले शनिवार तक नहीं करेंगे। ऐसा संकल्प अर्थात प्रतिज्ञा करने के पश्चात, उस संकल्पित तेल को शनि देव की मूर्ति पर चढ़ाते हुए, अपनी इस प्रतिज्ञा/संकल्प को निभाने के लिए शनि देव को ही अपना साक्षी बना लेवें। तेल कितना चढ़ाया, इससे फर्क नहीं पड़ेगा, परन्तु बिना प्रतिज्ञा किए हुए यदि कोई १५ किलो का पीपा भरकर तेल चढ़ाए, तब भी कोई फल कभी नहीं मिलेगा और शनि देव का कोप उस पर कम नहीं होगा।

पंडितों से शनि देव के मंत्रों का जाप करवाना

यदि कोई व्यक्ति ९२००० बार शनि का मंत्र जपे या पण्डितों द्वारा शनि मंत्र का जाप करवाए, तब भी बुरे कामों से बचने की उपर्युक्त प्रतिज्ञा/संकल्प किए हुए बिना उसके सभी उपाय व्यर्थ जाते हैं, **क्योंकि शनि देव के समक्ष किया हुआ ऐसा संकल्प/प्रतिज्ञा का पालन करना ही पूर्ण फलदायी है।**

शनि देव को नमस्कार,
प्रणाम और प्रार्थना कैसे करें ?

कुछ लोग शनि देव के समक्ष खड़े होकर दोनों हाथों से प्रणाम करते हुए अनजाने में प्रार्थना करते हैं कि हे ! शनि देव आप अपनी कृपा दृष्टि हम पर बनाए रखना। ऐसा भूलकर भी नहीं करना चाहिए क्योंकि शनि देव की वक्रदृष्टि जिस पर पड़ जाती है, उसका तो अनर्थ हो जाता है। शनि देव तो स्वयं ही अपनी दृष्टि झुकाकर रखते हैं। शनि मंदिर में सूर्योदय से पूर्व या सूर्यास्त के पश्चात ही जाना चाहिए जिससे कि उनकी मूर्ति पर हमारी निगाहें नहीं जावें। अंधेरे में मूर्ति पर निगाह कम ही जाती है। रात्रि में भी शनि मंदिर में बहुत अधिक उजाला नहीं होना चाहिए।

शनि देव को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार या प्रणाम करने की जगह, अपना सिर और धड़ शनि देव के आगे झुकाते हुए दोनों हाथ कमर के पीछे ले जाकर उनको बाँधकर नमन करना चाहिए। दोनों हाथों को जोड़कर नमस्कार करने का अर्थ है या तो आप किसी का स्वागत कर रहे हैं अथवा उसको अपने यहाँ से बिदा कर रहे हैं। इसलिए शनि देव और महालक्ष्मी को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार नहीं करना चाहिए। शनि देव के समक्ष अपना दिल और दिमाग दोनों को झुकाते हुए यह प्रतिज्ञा करना चाहिए कि वे सब बुरे कार्य जो शनि देव को पसन्द नहीं है, उनको अब मैं नहीं करूंगा। यदि ऐसी प्रतिज्ञा करके उसका ईमानदारी से पालन नहीं करेंगे, तो भले ही कोई सैंकड़ों उपाय करते हुए उन पर लाखों रुपए खर्च कर देवे, परन्तु वह शनि देव के कोप से कभी नहीं बच सकता है।

शनिदेव को इस मंत्र से प्रणाम करना चाहिए

नीलांजन समाभासं सूर्यपुत्रं यमाग्रजम ।

छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम ।।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि देव को क्रूर ग्रह माना गया है, परन्तु शनिदेव बहुत दयालु हैं और धार्मिक प्रकृति के हैं। यदि भक्तजन इनकी श्रद्धापूर्वक भक्ति करता है, तब उसे यह निहाल कर देते हैं। शनि देव की कृपा से दरिद्रता का नाश एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। शनि देव की इस महिमा को पढ़कर कम से कम ७ भक्तों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें या पढ़ाएं, और प्रत्येक शनिवार को शनि देव को अप्रिय उपर्युक्त बुरे कार्यों को करने से बचे रहने की प्रतिज्ञा दोहराते रहें, तब शनि देव अति प्रसन्न होकर आपके सभी दुःख दूर कर देंगे और आपका घर धन–धान्य और सम्पत्ति से भर देंगे।

You can
Contact me on -

93148 77066

0141-220 2220
220 2748
400 1653

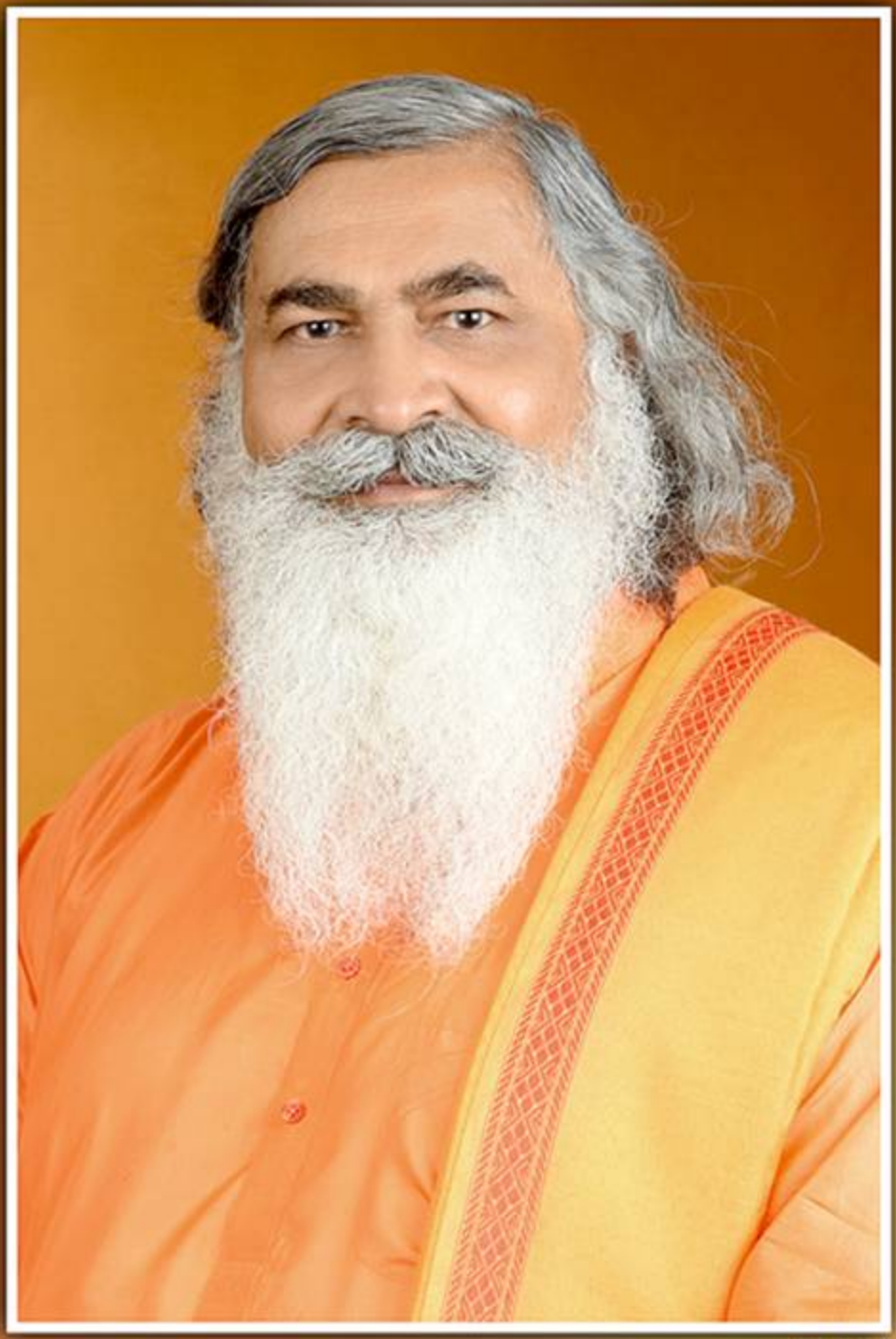

Thank You